एकता में बल

एक किसान था। उसके चार बेटे थे। सभी बलवान् और मेहनती थे। किसान के सभी मित्र उससे कहा करते थे, 'तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुम्हारे यहाँ ऐसे अच्छे बच्चों ने जन्म लिया है।'

परन्तु बेचारा किसान बहुत दुखी था। क्योंकि उसके चारों बेटे हमेशा आपस में लड़ते–झगड़ते रहते थे। किसान ने अपने बेटों को बहुत समझाया कि उन्हें इस तरह आपस में लड़ना–झगड़ना नहीं चाहिये।

परन्तु उन्होंने अपने पिता की एक न सुनी। किसान को यही चिंता सताती रहती थी कि वह अपने बेटों में एकता कैसे कायम करे।

एक दिन उसे अपनी समस्या का एक उपाय सूझ ही गया। उसने अपने चारों बेटों को बुलाया। उन्हें लकड़ियों का एक गट्ठर दिखाकर उसने कहा, 'आओ, आज मैं देखना चाहता हूँ कि तुम लोग कितने बलवान् हो। क्या तुममें से कोई इस गट्ठर को खोले बिना तोड़ सकता है?'

किसान के चारों बेटे बारी–बारी से आगे आए। उन्होंने खूब ताकत लगाई। पर उनमें से कोई भी लकड़ियों का गट्ठर तोड़ नहीं सका। अब किसान ने गट्ठर खोलकर लकड़ियों को अलग–अलग कर दिया। उसने अपने बेटों को एक–एक लकड़ी देकर उसे तोड़ने के लिए कहा। सभी लड़कों ने बहुत आसानी से अपनी–अपनी लकड़ी तोड़ डाली।

किसान ने कहा, 'देखा! एक–एक लकड़ी को तोड़ना कितना आसान होता है। इन्हीं लकड़ियों को एक साथ गट्ठर में बाँध देने पर ये कितनी मजबूत हो जाती हैं। इसी तरह तुम लोग मिल–जुलकर एक साथ रहोगे, तो मजबूत बनोगे और आपस में लड़–झगड़कर अलग–अलग हो जाओगे, तो कमजोर बनोगे।'

"एकता में ही बल है, फूट में विनाश निश्चित है।"

अभ्यास कार्य

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद की मदद से लिखिए–

प्र.1 किसान के कितने बेटे थे ?

.....

प्र. 2 किसान क्यों दुःखी था ?

.....

प्र. 3 किसान ने अपने बेटों को क्या तोड़ने के लिये दिया ?

.....

प्र. 4 किसान के बेटे क्या नहीं तोड़ पाए–

(लकड़ियों का गट्ठर / एक–एक लकड़ियाँ)

प्र. 5 कहानी पढ़ कर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

इसी तरह तुम लोग मिल–जुलकर एक साथ रहोगे, तो ..... बनोगे और आपस में लड़–झगड़कर अलग–अलग हो जाओगे, तो .....बनोगे।'

प्र. 6 इस कहानी से हमें क्या सबक मिलता है ?

.....

प्र. 7 शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

गटठर :– .....

झगडते :– .....

लकड़ीयाँ :– .....

रवीन्द्र कुमार वर्मा
पी.आर.टी.
के.वि. अनन्तनाग